आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-133 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | अगस्त 2025 | मूल्य - 5 रूपए

भीगी किताबें, टपकती छतें और बहते सपने, बाढ़ की मार, सड़क एवं कामकाजी बच्चों पर कर रही अत्याचार

बालकनामा रिपोर्टरः दामिनी, किशन व प्रिंस

वर्तमान में पूरे भारत में बारिश और बाढ़ का कहर मंडरा रहा है। बिहार, पंजाब, दिल्ली और नोएडा जैसे कई राज्यों में लोग बाढ़ से परेशान हैं। सड़क पर रहने वाले तथा कामकाजी बच्चे भी इन कठिन परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं। ऐसे में बालकनामा के पत्रकार उन झुग्गी बस्तियों तक पहुँचे, जो नदियों के किनारे स्थित हैं और जहाँ ये बच्चे रहते हैं। वहाँ उन्होंने बारिश और बाढ़ से उत्पन्न समस्याओं को समझने और यह जानने का प्रयास किया कि बच्चे किस प्रकार इन हालातों का सामना कर रहे हैं। नोएडा सेक्टर 62 में रहने वाली 13 वर्षीय रीना (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'हम सड़क किनारे बस्तियों में रहते हैं। इस क्षेत्र में लगभग 70 से अधिक झुग्गियाँ हैं। यदि हम किसी गाँव या मोहल्ले में किराए पर कमरा लेते हैं, तो उसका किराया 3,500 से 4,000 रुपये तक होता है। जबकि बस्ती में झुग्गी का किराया केवल 1,000 से 1,500 रुपये तक होता है। यही कारण है कि हम झुग्गियों में रहना पसंद करते हैं, क्योंकि हर महीने इतना अधिक किराया देना हमारे लिए संभव नहीं है। कई बार ऐसा भी होता है कि जब हमारे पास किराया देने के पैसे नहीं होते, तो मकान मालिक अपमानजनक शब्दों का प्रयोग करता है और तरह-तरह से तंग करता है। यही कारण है कि अधिकांश लोग झुग्गियों में रहना ही उचित समझते हैं।' नोएडा के सेक्टर 14 ए के पास यमुना नदी स्थित है, जिसके किनारे पर अधिकतर बस्तियां बसी हुई हैं। वर्तमान में यहां कई घर बाढ़ की वजह से डूब चुके हैं। जब पत्रकार वहां पहुंचे तो आसपास रहने वाले बच्चों और माता-पिता से जानकारी ली। 13 वर्षीय राहुल (परिवर्तित नाम) ने बताया कि इस स्थान पर लगभग 100 से अधिक झुग्गियां थीं, जो अब बाढ़ आने के कारण डूब चुकी हैं। लगातार बारिश हो रही है और समाचारों में भी दिख रहा है कि कई स्थानों पर बाढ़ आ चुकी है और कई जगहों पर आने की संभावना बनी हुई है। यमुना के पानी के तेज बहाव को देखकर हमें भी अंदेशा हुआ था कि बाढ़ आ सकती है। इसी कारण हम धीरे-धीरे अपना सामान निकाल रहे थे, लेकिन रात में अचानक पानी का स्तर तेजी से बढ़ गया। हालांकि हमने अधिकतर सामान निकाल लिया था, फिर भी झुग्गियों में पानी घुस आया और जो बचा-खुचा सामान था वह भी बह गया। फिलहाल सभी बस्तीवासी सड़क के किनारे छोटे-छोटे तिरपाल डालकर गुजर-बसर कर रहे हैं। अभी तक उन्हें कोई सरकारी सुविधा नहीं मिली है। पास ही एक मंदिर है जहां पूजा करने आने वाले लोग हमारी स्थिति देखकर बिस्कुट, नमकीन जैसी चीजें देकर जा रहे हैं। कई परिवार अपने पास जोड़े हुए पैसों से होटल से खाना मंगवाकर खा रहे हैं।

इस बस्ती के सभी परिवार कबाड़ का काम करते हैं, लेकिन बाढ़ में उनका सारा कबाड़ भी बह गया। सेक्टर 59 में रहने वाले 10 वर्षीय गोलू (परिवर्तित नाम) ने अपनी स्थिति बताते हुए कहा कि जिस बस्ती में हम रहते हैं, उसके किनारे लंबे-लंबे बिजली के खंभे लगे हुए हैं। जब भारी बारिश होती है तो तार टूटने और खंभा गिरने का डर बना रहता है। इस बारिश में एक खंभा गिर भी गया था और उसके तार टूटकर सड़क पर बिखर गए थे। सौभाग्य से उस समय किसी को करंट नहीं लगा और न ही झुग्गियों में करंट पहुंच पाया। बाद में बिजली विभाग के कर्मचारियों को बुलाकर उस खंभे को ठीक कराया गया। पश्चिम दिल्ली की अनेक बस्तियों में भी पत्रकार पहुंचे और यह जानने का प्रयास किया कि क्या आसपास बाढ़ जैसी कोई संभावना उत्पन्न हुई है? बच्चों ने बताया कि हमारी बस्ती से कई किलोमीटर दूर नदी है, इसलिए यहां बाढ़ जैसी स्थिति नहीं बनी है। हालांकि, लगातार बारिश के कारण अनेक समस्याएं सामने आई हैं। शिवाजी पार्क की बस्ती में रहने वाली 16 वर्षीय बालिका कविता (परिवर्तित नाम) ने बताया कि यहां छोटी-छोटी झुग्गियां हैं, जिन्हें सभी ने तिरपाल से बनाया हुआ है। तिरपाल ऊपर और दोनों ओर तो ढका हुआ है, लेकिन नीचे से खुला है ताकि हवा आती रहे। जब बारिश होती है तो पानी भर जाता है और ऐसा लगता है मानो हम बाढ़ से जूझ रहे हों। घर पूरी तरह गीला हो जाता है और बैठने- सोने में परेशानी आती है। जिन घरों में चारपाई या पलंग है, वे लोग अपना सामान और खुद को बचा लेते हैं, लेकिन जिनके पास नहीं है, वे गीली जमीन पर ही गुजारा करते हैं। बारिश के कारण चूल्हा भी गीला हो जाता है, जिसकी वजह से हमें नमकीन, बिस्कुट आदि खाकर पेट भरना पड़ता है। हमारे पास मिट्टी के चूल्हे के अलावा कोई और सहारा नहीं है। भारी बारिश में लकड़ियां भी भीग जाती हैं, और जब तक धूप नहीं

शेष पृष्ठ 2 पर

बालिका ने शिक्षा में वापस जगह बनाई, फिलहाल स्कूल में नियमित कर रही पढ़ाई

बालकनामा रिपोर्टर : दामिनी
बातूनी रिपोर्टर : साक्षी

जयपुर के जयसिंहपुरा खोर समुदाय में एक रहने वाली 15 वर्षीय बालिका सोनाक्षी (परिवर्तित नाम), अब सरकारी विद्यालय की कक्षा 9 की छात्रा बन चुकी है। विद्यालय में दाखिला होने पर बालिका की खुशी का ठिकाना नहीं है।

पहले सोनाक्षी की शिक्षा की राह में एक अनचाही दीवार खड़ी हो गई थी अर्थात उसकी आधार कार्ड में दर्ज उम्र वास्तविक आयु से अधिक होने के कारण पिछले वर्ष स्कूल में दाखिला नहीं मिल पाया था। लेकिन उम्मीद की किरण तब नजर आई, जब चेतना संस्था के सहयोग से बालिका को ओपन बेसिक एजुकेशन में एडमिशन मिला और उसने 8वीं कक्षा 'अ' ग्रेड से पास की तथा कक्षा की मार्कशीट मिलने के परिणामस्वरूप महात्मा गांधी सरकारी विद्यालय में एडमिशन मिलना सम्भव हो सका।

बालिका ने उत्साह से बताया की हमारी बस्ती से चेतना संस्था द्वारा संचालित शिक्षा केंद्र में लगभग 15 बच्चों ने ओपन बेसिक एजुकेशन के अंतर्गत कक्षा तीसरी व पाँचवी की परीक्षा पास की इनमें से 3 बच्चों को सरकारी विद्यालय में एडमिशन मिल गया हैं। पहले सोनाक्षी घर में छाजले बनाने का काम करती थी और अब वह स्कूल की ड्रेस पहनकर किताबों और दोस्तों के साथ अपने सपनों की ओर बढ़ रही है।

बालिका ने परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर यह साबित किया कि अवसर मिले तो कोई भी बच्चा पीछे नहीं रह सकता। ये खबर सोनाक्षी जैसे ही उन हजारों बच्चों की ओर भी इशारा करती है जो कभी दस्तावेजों की कमी या

सामाजिक हालातों के चलते शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। यदि सही समय पर सही सहयोग मिले, तो हर बच्चा शिक्षा की मुख्यधारा में लौट सकता है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

शकूरपुर समुदाय में मसालों की फैक्ट्री से उत्पन्न समस्याओं से बेहाल होते बच्चे

ब्यूरो रिपोर्ट

पश्चिमी दिल्ली के शकूरपुर समुदाय में रहने वाले लोग मसालों की फैक्ट्री से उठने वाले धुएँ के कारण रोजमर्रा की ज़िंदगी में गंभीर समस्याओं का सामना कर रहे हैं।

इस इलाके की गलियों में हर समय मसालों का धुआँ फैला रहता है, जिससे बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों का जीवन कठिन हो गया है। यहाँ के लोगों की साँसें अक्सर धुएँ से घुटती हैं और आँखों में जलन होने लगती है।

समुदाय के बच्चे, जो स्कूल जाते हैं, हर दिन इन धुएँ भरे रास्तों से गुजरते हैं। कई बार धुआँ इतना तेज होता है कि उन्हें साँस लेना मुश्किल हो जाता है और पढ़ाई या खेल-कूद में ध्यान लगाना भी मुश्किल हो जाता है।

समुदाय में रहने वाली 11 वर्षीय पिंकी (परिवर्तित नाम) बताती हैं कि मसालों की फैक्ट्री से निकलने वाला धुआँ उनके स्वास्थ्य और दैनिक जीवन को प्रभावित कर रहा है। उनका कहना है कि 'धुआँ इतनी मात्रा में फैलता है कि हम लोग ठीक से साँस नहीं ले पाते और आँखें जलने लगती हैं।' बच्चे इस धुएँ में स्कूल जाते और आते हैं, जिससे उनकी पढ़ाई प्रभावित होती है।

पिंकी और अन्य बच्चों के माता-पिता में से कुछ खुद भी इन फैक्ट्रियों में काम करते हैं, इसलिए वे शिकायत करने से डरते हैं। उन्हें लगता है कि अगर उन्होंने आवाज उठाई तो उनके रोजगार के अवसर खतरे में पड़ सकते हैं। यहाँ की समस्या केवल बच्चों तक सीमित नहीं है।

बड़े-बुजुर्ग और महिलाएँ भी रोजाना इन धुएँ भरे रास्तों से गुजरने के दौरान परेशानी झेलती हैं।

कंपनी में लगे बड़े पंखों से मसालों का धुआँ बाहर निकलता है, जिससे पूरे मोहल्ले की हवा प्रभावित होती है और लोगों को लगातार सांस लेने में दिक्कत होती है। हालांकि स्कूल जाने वाले बच्चों की संख्या कम है, जो स्कूल जाते हैं, उन्हें भी इस रास्ते से गुजरते समय काफी मुश्किलें झेलनी पड़ती हैं। कई बार बच्चों और बड़ों की आँखों में मसालों का धुआँ चला जाता है और देखना और साँस लेना मुश्किल हो जाता है। समुदाय के लोग कई बार सोचते हैं कि क्यों उनकी शिकायतें सुनी नहीं जातीं और क्यों उनके अधिकारों की रक्षा नहीं होती। यहां तक कि किसी ने भी अभी तक इस समस्या को बड़े अधिकारियों तक नहीं पहुँचाया।

बालकनामा अखबार इस रिपोर्ट के माध्यम से शकूरपुर समुदाय की इस गंभीर समस्या को उजागर कर रहा है और संबंधित अधिकारियों से अपील करता है कि वे इस मुद्दे पर ध्यान दें और आवश्यक कार्रवाई करें। ताकि बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों की रोजमर्रा की ज़िंदगी आसान हो सके, स्वास्थ्य सुरक्षित रहे और लोग अपने अधिकारों के साथ जीवन जी सकें।

भीगी किताबें, टपकती छतें और बहते सपने, बाढ़ की मार, सड़क एवं कामकाजी बच्चों पर कर रही अत्याचार

पृष्ठ 1 का शेष

निकलती, वे सूखती नहीं। लकड़ियां सूखने पर ही चूल्हे को दोबारा बनाकर आग जलाते हैं और फिर खाना बन पाता है। शकूरपुर के पास की बस्ती में रहने वाले 14 वर्षीय काबिल (परिवर्तित नाम) ने बताया कि बारिश के कारण सभी लोग परेशान हैं। कई जगहों पर बाढ़ जैसी समस्या बनी हुई है, हालांकि यहां वैसी स्थिति नहीं है। लेकिन जब भी बारिश होती है तो हमें काफी दिक्कत होती है। मौसम का कोई भरोसा नहीं रहता, कभी सुबह से ही आसमान में बादल छाए रहते हैं और कभी अचानक दोपहर में मौसम बदल जाता है। अक्सर स्कूल जाते समय मौसम ठीक रहता है, लेकिन छुट्टी के समय बारिश शुरू हो जाती है। घर लौटते समय तेज बारिश होने पर बच्चे बचने के लिए कोई जगह ढूंढते हैं। कभी-कभी सुरक्षित जगह मिल जाती है, लेकिन कई बार भीगना पड़ता है। इससे उनकी कॉपियां, किताबें, स्कूल की ड्रेस और जूते भीग जाते हैं। घर पहुंचकर वे कॉपियों-किताबों को सुखाने की कोशिश करते हैं। कुछ किताबें तो बच जाती हैं, लेकिन जो ज्यादा भीग जाती हैं वे फट भी जाती हैं। तब बच्चे उन्हें फेविकोल और धागे से जोड़कर सुधारते हैं ताकि लंबे समय तक चल सकें। ड्रेस गीली हो जाने से बच्चे अक्सर अगले दिन स्कूल भी नहीं जा पाते। पश्चिम दिल्ली की ही एक बस्ती में रहने वाली 9 वर्षीय बालिका ने बताया कि हमारा घर चारों ओर ईंटों से बना है और ऊपर सीमेंट की चादर रखी हुई है। हमारे घर के पास की गलियां बहुत पतली हैं और उनमें पतली नालियां भी बनी हैं। जब बारिश होती है तो गलियों में पानी भर जाता है और पतली नालियों का पानी घर के अंदर तक घुस आता है। इससे काफी दिक्कत होती है, और जब तक बारिश बंद नहीं होती, पानी निकालना बहुत मुश्किल हो जाता है। बालिका ने बताया कि उस पानी में गंदगी, कीड़े-मकोड़े और कांच के टुकड़े तक आ जाते हैं, जो सफाई करते समय हाथ या शरीर में लग जाते हैं। बारिश बंद होने के बाद जालियों से पानी निकाला जाता है और बड़े-बड़े कचरे व गंदगी को हाथ से बाहर फेंकना पड़ता है। जयपुर में लगातार हो रही तेज बारिश के दौरान सड़क एवं कामकाजी बच्चों को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। जब बालकनामा पत्रकारों ने विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया और बच्चों से बातचीत की, तो बच्चों ने बताया कि बारिश शुरू होते ही सबसे पहले उन्हें खुशी मिलती है। वे बस्ती में झुग्गियों के बाहर नहाते हैं और कागज की नाव बनाकर खेलते हैं। लेकिन इसी खुशी के साथ कई तरह की परेशानियाँ भी जुड़ी होती हैं। आंग्यावास कच्ची बस्ती की 12 वर्षीय बालिका परिणीता (परिवर्तित नाम) ने बताया कि बारिश वाले दिनों में उसके माता-पिता फेरी का काम करने नहीं जा पाते, जिससे घर खर्च चलाना और खाने के लिए पैसे जुटाना मुश्किल हो जाता है। 12 वर्षीय बालक युग (परिवर्तित नाम) ने कहा कि भारी बारिश के कारण बच्चे स्कूल और सेंटर नहीं जा पाते, जिससे पढ़ाई का नुकसान होता है। स्कूल तीन किलोमीटर दूर है और रास्ता खराब व गड्ढों से भरा होता है। ऐसे में रिक्शा नहीं मिलता और यदि मिल भी जाए तो उसका किराया इतना अधिक होता है कि देना संभव नहीं होता। कई बार तो स्कूल में भी पानी भर जाता है। बच्चों ने यह भी बताया कि बारिश में बिजली के खंभों और खुले तारों से बड़ा खतरा बना रहता है। एक बालक ने बताया कि कुछ समय पहले ही बिजली के बॉक्स से करंट लगने के कारण चार साल की एक बच्ची घायल हो गई थी। अब वह ठीक है, लेकिन डर बनी रहती है। बारिश में बिजली के खंभों से करंट लगने और ट्रांसमीटर में आग लगने का खतरा हमेशा बना रहता है। कई बार गायें भी करंट से मर जाती हैं जिन्हें कोई उठाता नहीं, जिससे बदबू, मक्खियाँ और बीमारियों का खतरा और बढ़ जाता है। बच्चों ने यह भी साझा किया कि बारिश के दिनों में उनके घरों और झोपड़ियों में पानी भर जाता है, छत टपकती है और उनका सामान, कॉपियाँ, किताबें और कपड़े सब गीले हो जाते हैं। साथ ही मलेरिया, डेंगू और चिकनपॉक्स जैसी गंभीर बीमारियों का खतरा भी बढ़ जाता है। कुछ शरारती बच्चे बारिश के दौरान गंदे नालों में मछली पकड़ने जाते हैं, जिससे उनके हाथों में घाव और खुजली हो जाती है। हालांकि वे उन मछलियों को बेचकर कुछ पैसे भी कमा लेते हैं। वहीं, 11 वर्षीय बालक रियान (परिवर्तित नाम) ने बताया कि कई बार बारिश की वजह से वह खिलौने बेचने नहीं जा पाता और अगर चला भी जाए तो बारिश में बिक्री नहीं होती। बच्चों ने बारिश से बचने के अपने छोटे-छोटे जुगाड़ भी बताए। कोई छाता लेकर निकलता है, तो कोई प्लास्टिक की पन्नी ओढ़ लेता है। घरों में छत से टपकते पानी को रोकने के लिए बाल्टी और भगौने रख दिए जाते हैं। पानी के बहाव को रोकने के लिए झोपड़ियों और घरों के बाहर मिट्टी जमाई जाती है और तिरपाल लगाए जाते हैं।

11 वर्षीय बालिका पलक (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हमारी बस्ती में पानी की कमी रहती है, लोग दूर-दूर से पानी लाते हैं। इसलिए पानी की कमी को दूर करने के लिए कई परिवार घरों के बाहर टब और बाल्टी रखकर बारिश का पानी इकट्ठा करते हैं और फिर उसका उपयोग करते हैं। लखनऊ के सदर बाजार समुदाय का दौरा करने जब बालकनामा रिपोर्टर पहुँची और बच्चों से बातचीत की, तो पूछा कि बारिश के मौसम में आप सभी किन-किन समस्याओं का सामना कर रहे हैं और आपके जीवन पर इसका क्या प्रभाव पड़ रहा है?

इस पर 12 वर्ष की अंजली (परिवर्तित नाम) ने बताया कि, बारिश के चलते बस्ती में पानी भर जाता है और बगल में बड़ा नाला भी है, जो बारिश के समय ओवरफ्लो होकर बस्ती तक आ जाता है। यह गंदा और बदबूदार पानी होता है, जिसकी दुर्गंध से सांस लेना भी मुश्किल हो जाता है। यह पानी घरों तक घुटनों के ऊपर तक भर जाता है, जिससे खाने का राशन और जरूरी दस्तावेज भीग जाते हैं। इसी दौरान 10 वर्ष की लता (परिवर्तित नाम) ने बताया कि, पानी भर जाने से हम स्कूल नहीं जा पाते, क्योंकि पानी कमर तक आ जाता है और ड्रेस भीग जाती है। बदबूदार और सड़न वाले पानी के कारण हम बीमार भी पड़ जाते हैं। आने-जाने का कोई रास्ता नहीं बचता, सबको पानी में ही चलना पड़ता है। कई बार नगर निगम कार्यालय में शिकायत की गई, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। इसके बाद बालकनामा रिपोर्टर ने सुग्गामऊ समुदाय का भी दौरा किया, जो सड़क से ढलान पर बसा हुआ है। वहाँ बच्चों से बातचीत में पता चला कि बारिश का पानी और सड़क से बहकर आने वाला पानी पूरे समुदाय में भर जाता है। कच्चा रास्ता होने की वजह से कीचड़ हो जाता है और पानी रुक जाने से आने-जाने में लोगों को बहुत दिक़्क़त होती है। जब रिपोर्टर ने 12 वर्ष की सानिया (परिवर्तित नाम) से बात की, तो उसने बताया कि, हर गली में पानी भरने से कीचड़ हो जाता है, जो घुटनों तक पहुँच जाता है। अगर पानी कई दिनों तक रुक जाए, तो बदबू के साथ मच्छरों का प्रकोप भी बढ़ जाता है, जिससे डेंगू, मलेरिया जैसी बीमारियाँ फैलती हैं। कई बार हम लोग स्थानीय पार्षद के पास भी गए, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। हम सभी मजबूरी में कीचड़ और गंदे पानी से होकर गुजरते हैं। भारी बारिश के चलते झुग्गियों से भी पानी टपकता है, जिससे राशन और कपड़े भीग जाते हैं। झुग्गी के अंदर पानी भर जाने से हमें पूरी रात जागना पड़ता है और कई बार बच्चे बीमार भी पड़ जाते हैं। बच्चों ने बताया कि बारिश जहाँ हमारे लिए खेल और मस्ती लेकर आती है, वहीं दूसरी ओर यह हमारी पढ़ाई, रोजगार, स्वास्थ्य और सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती भी बन जाती है। फिर भी हम छोटे-छोटे उपाय करके इन परिस्थितियों का सामना करते हैं और अब तो यह हमारे रोजमर्रा की आदत सा बन गया है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

गर्मियों की छुट्टियों में घर निर्माण के लिए गाँव पहुँचे बच्चे

बातूनी रिपोर्टर हेमा व रिपोर्टर किशन

बढ़ती गर्मी के प्रकोप के कारण अप्रैल से जून तक बच्चों को स्कूल की छुट्टियाँ मिली थीं। इस अवकाश के दौरान बच्चों ने अपने समय को किस तरह से बिताया, यह जानने के लिए हमने उनसे विस्तार से बातचीत की। नोएडा सेक्टर 126 में किराए के मकान में रहने वाली 14 वर्षीय बालिका रूपा (परिवर्तित नाम) ने बताया कि वह वर्तमान में आठवीं कक्षा में पढ़ाई कर रही है और अपने माता-पिता के साथ नोएडा में रहती है। जब गर्मियों की छुट्टियाँ शुरू हुईं, तो उसे बहुत खुशी हुई और उसने सोचा कि इस बार छुट्टियाँ अच्छे से बिताई जाएँगी। जैसे ही छुट्टियाँ शुरू हुईं, उसके पिताजी ने उसे अपने गाँव भेज दिया। गाँव जाने के समय उसने अपनी सारी कॉपियाँ और किताबें साथ रखीं, ताकि छुट्टियों का स्कूल का काम भी पूरा कर सके। बालिका ने बताया कि पिताजी ने उसे गाँव इसलिए भेजा क्योंकि वहाँ घर का निर्माण चल रहा था और उन्हें इसमें मदद करनी थी। गाँव पहुँचने के बाद उसने पूरे दिन घर के निर्माण में मदद की। इसमें बेलदारों का ध्यान रखना, पानी देना, चाय बनाना, अगर किसी चीज की कमी हो तो दुकान से लेकर आना, जैसी जिम्मेदारियाँ शामिल थीं। बालिका ने कहा कि पूरे दिन यह काम करने में समय बहुत तेजी से गुजर जाता था। घर में मिट्टी, सीमेंट और बजरी फैल जाती थी, जिससे काम करना और भी मेहनत वाला हो जाता था। लेकिन उसने यह भी कहा कि इस अनुभव से उसे बहुत कुछ सीखने को मिला। घर की रोजमर्रा की ज़िम्मेदारियों के साथ-साथ उसने अपने स्कूल का छुट्टियों का काम भी याद किया और रात के समय थोड़ा वक्त निकालकर उसे पूरा किया। यह काम लगभग 25 दिनों तक चला। बालिका ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि इस दौरान उसे खेलने का मौका नहीं मिला, जिससे थोड़ी दुख भी हुई। लेकिन दूसरी ओर, खुशी की बात यह थी कि गाँव में उनके घर का निर्माण अच्छे से पूरा हो गया। उसे यह देखकर संतोष हुआ कि उसके परिवार के लिए उसका योगदान वास्तव में महत्वपूर्ण था।

सड़क और कामकाजी बच्चों का स्कूल जाने का सपना हुआ सच

ब्यूरो रिपोर्ट

जयपुर के विद्याधर नगर स्थित जेडीए बापू बस्ती में सड़क और कामकाजी बच्चों की शिक्षा के लिए चल रहे वैकल्पिक शिक्षा केंद्र में से पाँच बच्चे पहली बार स्कूल गए। ये सभी पाँचों बच्चे बिना आधार कार्ड के है व कामकाजी है, कुछ उनमें से घर जूते के फीते बनाते है कुछ कबाड़ा बीनते है। बिना दस्तावेज व पढ़ाई के निम्न स्तर के कारण बच्चों का स्कूल में बैठना सम्भव नहीं था, हालांकि दस्तावेज अभी भी नहीं बन पाए पर अब स्कूल ने बच्चों से बात कर उनके गुण पहचाने, नेतृत्व क्षमता देखी व बच्चों को स्कूल में कक्षाओं में बैठने, पढ़ने की अनुमति दी। इन सबमें, केंद्र से जुड़कर वैकल्पिक शिक्षा लेने के बाद बच्चों में खासा परिवर्तन आया व जीवन कौशल कार्यशाला से व्यक्तिगत साफ-सफाई, बढ़ते कदम बैठकों से कानून एवं बाल अधिकार सीखने के कारण सम्भव हो पाया और बच्चे पहली बार अपने जीवन में स्कूल की दिनचर्या देख खुश हो पाए एवं खुशी से सुबह जल्दी ही स्वयं से तैयार होकर स्कूल जाने लगे, बच्चों के लिए यह सपना सच होने से कम नहीं है, 11 वर्षीय आनंदी कहती है की' मेरी बहन को मैं आंगनवाड़ी छोड़ देती हूँ और कक्षा 4 में बैठती हूँ और पढ़ती हूँ। मुझे पहले से हिंदी पढना आता है, इसलिए मुझे 4 क्लास में बैठने का मौका मिल गया ₹ इसी तरह 9 वर्षीय कार्तिक (परिवर्तित नाम) जो कबाड़ा बीनता है, बताता है की वहाँ मैडम अइउऊ भी बुलाती है और खाना भी मिलता है' इस तरह बच्चों को पहली बार स्कूल के अनुभव की परिक्रियाऐं सामने आई हैं, बच्चे यह नहीं जानते की वह बिना नाम यहां कितने दिन बैठ पाएंगे पर उम्मीद है की दस्तावेजों का कोई न कोई हल निकलेगा और बच्चे ही नही बोलेंगे बल्कि उनका वहाँ नाम भी बोलेगा, फिलहाल पाँचों बच्चे स्कूल जाकर बेहद खुश है व अपने प्रधानाचार्य के लिए क्राफ्ट की चीजें धन्यवाद स्वरूप ले जाना चाहते है ताकि वो उन्हें अपने तरीके से धन्यवाद दे सके।

गर्मी में लस्सी बेचने को मजबूर मासूम

बालकनामा रिपोर्टर : दामिनी
बातूनी रिपोर्टर : साक्षी

बालकनामा रिपोर्टर दामिनी जयपुर की खोर बस्ती से कुछ दूरी पर सड़क से गुजर रही थी तो देखा की जिन बच्चों की उम्र खेलने और पढ़ाई करने की है, वहीं एक मासूम 10 वर्षीय बालिका सुहानी (परिवर्तित नाम) अपने नन्हे हाथों में छाछ और चीनी लेकर लस्सी बेचने को मजबूर थी। यह दृश्य वास्तव में इस सभ्य समाज में बाल अधिकारों की अनदेखी और प्रशासन की उदासीनता की ओर भी इशारा करता है।

रिपोर्टर ने बालिका से विस्तार से जानकारी लेने के लिए चर्चा की तो बालिका ने बताया की वह दुकान से छाछ और चीनी लाकर इसे तैयार करती है और फिर उसे लोगों तक पहुंचाकर कुछ पैसे कमाने की कोशिश करती है। बालिका बताती है कि मैं लस्सी का एक गिलास 10 रू में बेचती हूं और एक दिन में 60 से 70 रू कमा लेती हूं। जब रिपोर्टर ने पूछा कि तुम स्कूल क्यों नहीं जाती हो तो बालिका ने जवाब दिया कि स्कूल जाने के लिए मेरे पास आधार कार्ड नहीं है और मैं अपने छोटे भाई बहनों का ध्यान भी रखती हूं, मेरे माता-पिता कबाड़ा बीनने चल जाते हैं। घर की जिम्मेदारियां होने के कारण मेरे पास न तो पढ़ने का समय है और ना ही खेलने का मौका।

बालिका के जीवन में न तो स्कूल की घंटी है और न ही किसी शिक्षक की दिशा, यह वास्तव में एक गंभीर संकेत है कि समाज में अभी भी बालिकाओं को शिक्षा और सुरक्षा से वंचित कर श्रम में धकेला जा रहा है।

बरिश भरी गलियों में ठेला खींचते नन्हे हाथ

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः कालू

जयपुर की जामडोली बस्ती में काले बादलों और पानी भरे हुए रास्तों के बीच बालकनामा पत्रकार ने देखा तो एक 13 वर्षीय बालक और उसकी 9 साल की बहन, बरसात में भीगते हुए ठेला खींचते नजर आए। रिपोर्टर ने जब उनसे बात की, तो पता चला कि उनका नाम गोलू और कुट्टी (दोनों परिवर्तित नाम) है। गोलू ने बताया कि वह आगरा रोड़ पुलिया के पास सड़क किनारे अपने माता-पिता और बहन के साथ रहता है। पिता शराब पीते हैं और माँ बीमार हैं, ऐसे में घर की ज़िम्मेदारी इन बच्चों के कंधों पर आ गई है। दोनों भाई-बहन कबाड़ बीनकर घर चलाने की कोशिश करते हैं उनकी माता प्रतिदिन बच्चों को ठेला देकर अलग- अलग जगह कबाड़ इकट्ठा करने को भेजती है और स्वयं भी आसपास रहकर यही कार्य करती हैं। लेकिन माँ बीमार होने के कारण ज्यादा काम नहीं कर पाती । रिपोर्टर द्वारा बारिश में काम करने में दिक्कतों के सवाल पर गोलू ने बताया कि ' हमें बहुत परेशानी होती है। ठेला अक्सर पानी भरे गड्ढों में फँस जाता है, कई बार गिरने का डर भी रहता है, पर क्या करें, करना पड़ता है।' गोलू ने बताया कि वह किसी अन्य राज्य से हैं और हर साल कुछ महीनों के लिए जयपुर आते हैं। वह कभी स्कूल नहीं गया। शायद उसकी स्कूल जाने की राह उन बरसाती गलियों से भी ज्यादा मुश्किल है, जिनसे वह रोज ठेला खींचते हुए गुजरता है।

बढ़ते कदम लीडर्स ने पार्षद को दीं शुभकामनाएँ और बस्ती की सफाई के लिए सौंपा पत्र

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः संदीप

जयपुर की कच्ची बस्ती प्रेमनगर के लीडर्स ने नेतृत्व और जागरूक नागरिकता की मिसाल पेश करते हुए एक अनोखी पहल की। बस्ती के बच्चों ने स्थानीय पार्षद श्रीमती विमला जी को उनके जन्मदिवस पर अपने हाथों से माला पहनाई और उनके स्वास्थ्य व दीर्घायु की कामना करते हुए हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। इसी अवसर का उपयोग करते हुए बच्चों ने बस्ती की एक गंभीर समस्या भी साझा की। हाल ही में हुई बारिश के कारण बस्ती की गलियों में पानी भर गया है, जिससे गड्ढे बन गए हैं और मच्छरों का प्रकोप बढ़ गया है। इससे डेंगू, मलेरिया जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ गया है। इस स्थिति को देखते हुए बच्चों ने पार्षद महोदया को एक सामूहिक पत्र भी सौंपा, जिसमें उन्होंने बस्ती में कीटनाशक दवाओं के छिड़काव की मांग की। इसके अतिरिक्त, बच्चों ने बस्ती तक जाने वाले रास्ते पर लंबी अवधि से चल रही खुदाई के कारण होने वाले हादसों के बारे में भी पार्षद को अवगत कराया। बच्चों की यह पहल दशार्ती है कि सही मार्गदर्शन और सहयोग से बच्चे न केवल अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो सकते हैं, बल्कि अपने समुदाय की समस्याओं के समाधान के लिए आवाज भी उठा सकते हैं। यह प्रयास वास्तव में बच्चों की नेतृत्व क्षमता को दशार्ता है एवं स्थानीय प्रशासन को भी एक सकारात्मक संदेश देता है कि बच्चे बदलाव के सच्चे भागीदार हो सकते हैं।

बड़े घर का संकट, बस्ती के बच्चों तक पहुँचने से कैसे बचा?

बातूनी रिपोर्टर भावना व रिपोर्टर किशन

जब भी कोई व्यक्ति कुछ अच्छा करना चाहता है, तो वह अक्सर खाने-पीने की या पहनने की चीजें जरूरतमंद बच्चों और बूढ़े-बुजुर्गों को बाँटता है। लेकिन कभी-कभी ये बाँटी गई चीजें मदद नहीं, बल्कि मुसीबत बनकर भी आ सकती हैं। हमारी बस्ती में भी कुछ ऐसा ही हुआ। हम नोएडा की एक बस्ती में रहते हैं, जहाँ सौ से ज्यादा झुग्गियाँ हैं। हमारे पास ही बड़ी-बड़ी बिल्डिंग्स हैं, जिनमें रहने वाले कुछ लोग दयालु भी होते हैं, जो रोज कुछ ना कुछ बाँटने के लिए बस्ती में आते रहते हैं। बच्चे तो वैसे भी छोटी उम्र के होते हैं, उन्हें अच्छा-बुरा समझ नहीं आता, और वे हर दी गई चीज खुशी-खुशी ले लेते हैं। लेकिन दो दिन पहले एक ऐसी घटना हुई जिसने हमें डरा दिया। एक बिल्डिंग में रहने वाली मैडम ने अपने घर का संकट दूर करने के लिए तंत्र-मंत्र करवाया, और फिर उस टोटके की चीजें अपने ड्राइवर-गार्ड के हाथों हमारी बस्ती में भेज दीं। जब गार्ड अंकल आए, तो उनके हाथ में एक थैली थी, जिसे देखकर बच्चों को लगा कि इसमें कुछ खाने-पीने का सामान होगा। उन्होंने वह थैली एक 11 साल की बच्ची को दे दी। बच्ची खुश हो गई, लेकिन तभी बस्ती में रहने वाले एक बड़े अंकल ने थैली को देखकर खोला। जैसे ही उन्होंने थैली खोली, उन्होंने देखा कि उसमें पाँच नींबू थे, जिन पर लाल रंग लगा हुआ था और उनमें सुई गड़ी हुई थी, साथ ही नीले चावल, दाल, लाल मिर्च और 11 रुपये भी रखे थे। यह देखकर अंकल को तुरंत समझ आ गया कि यह कोई टोटका है, कोई तांत्रिक चीज। बस्ती में हलचल मच गई। बस्ती के लोगों ने गार्ड अंकल से सवाल पूछे और उनकी मालकिन को फोन लगाया। लेकिन मालकिन ने फोन पर कहा कि उनके पास छोटे लोगों से बात करने का समय नहीं है, और फोन काट दिया। यह सुनकर बस्ती के अंकल और भी गुस्से में आ गए और पुलिस को बुलाने की बात करने लगे। तभी गार्ड अंकल ने सबके पैर पकड़कर माफी माँगी और कहा कि उन्हें पता ही नहीं था कि थैली में ऐसी चीजें हैं। उन्होंने बताया कि मालकिन ने उन्हें बिना बताए यह थैली देने को कहा था। तब जाकर लोगों ने

उन्हें डाँटा-फटकारा और फिर छोड़ दिया। वह 11 साल की बच्ची बाद में बहुत डरी हुई थी। उसने बताया, 'अगर मैं वह थैली अपने घर ले जाती और उसमें से नींबू या चावल-दाल का इस्तेमाल करती, तो शायद कोई संकट मेरे घर आ जाता।' यह सोचकर वह कांप गई। बच्चे बहुत भोले होते हैं, उन्हें नहीं पता होता कि कौन सी चीज सही है और कौन सी गलत। यह घटना हम सबके लिए एक बड़ी सीख है कि किसी भी चीज को बिना देखे-समझे नहीं लेना चाहिए, चाहे वह कितनी भी मीठी बातों के साथ क्यों न दी गई हो। सच कहते हैं - जिसका कोई नहीं होता, उसका ईश्वर होता है। समय रहते भगवान ने हमें इस संकट से बचा लिया, वरना न जाने क्या हो जाता।

दोस्ती बनी मिसाल, साथियों ने गाँव जाकर बाल विवाह होने से रोका

बालकनामा रिपोर्टर नितिन

गरीबी और परंपराओं की बेड़ियों में जकड़े समाज में जब कोई बच्चा आवाज उठाता है, तो वह सिर्फ.अपने लिए नहीं, बल्कि समाज के लिए भी उम्मीद बन जाता है। ऐसी ही एक मिसाल हैं प्रिया और शिवानी (बदले हुए नाम), जो चेतना संस्था के एक शिक्षा केंद्र में पढ़ती हैं। कमला नेहरू कैंप की झुग्गियों में रहने वाली इन दोनों बालिकाओं को जब पता चला कि उनकी दोस्त संगीता (बदला हुआ नाम) का विवाह महज 13 वर्ष की उम्र में उसके गांव में तय कर दिया गया है, तो उन्होंने इसे गंभीरता से लिया और अपनी सहेली को बचाने का फैसला किया। दोनों बालिकाएँ अपनी दादी के साथ गांव पहुँचीं, जहां शादी होने वाली थी। वहाँ जाकर उन्होंने संगीता के माता-पिता से बात की, उन्हें बाल विवाह से होने वाले नुकसान समझाए और कानूनी पहलुओं के बारे में बताया। शिवानी बताती हैं, 'हम बहुत डर रहे थे, लेकिन हमारी दोस्त को बचाना जरूरी था। जब हम बाल विवाह की बात करते हैं, तो लोग सोचते हैं कि यह उनका निजी मामला है, लेकिन यह एक अपराध है।' प्रिया ने बताया कि गांव में शुरू में लोग उनकी बात नहीं मान रहे थे, लेकिन जब उन्होंने बताया कि तय उम्र से एक साल पहले लड़की की शादी करना गैरकानूनी है, तो कुछ लोग उनकी बात समझने लगे। फिर परिवार पर असर हुआ और शादी रोक दी गई। अब संगीता फिर से स्कूल जाती है और बहुत खुश है। बातचीत के दौरान प्रिया और शिवानी ने आगे बताया कि उन्हें यह सब चेतना संस्था में चल रहे लाइफ स्किल सेशन के माध्यम से पता चला कि बच्चों का कम उम्र में विवाह करना कानूनी अपराध है। इस ज्ञान ने उन्हें हिम्मत दी और वे अपनी सहेली की जिंदगी बचा पाए। दोनों ने चेतना संस्था का बहुत-बहुत धन्यवाद दिया कि संस्था के ज्ञान व शिक्षा की वजह से उन्होंने किसी मासूम की जिंदगी खराब होने से बचाई।

क्यों सताता है यह डर?

बातूनी रिपोर्टर शिवांगी व रिपोर्टर किशन

डर कई तरह से लगता है–कभी माता-पिता का, कभी अध्यापकों का और कभी सुनी-सुनाई भूत-प्रेत की कहानियों का। इसी विषय पर बात तब शुरू हुई जब बस्ती में बालकनामा पत्रकार बच्चों से बातचीत कर रहे थे। तभी 12 वर्षीय बालिका पिंकी (परिवर्तित नाम) ने बताया कि जिस कमरे में वे रहते हैं, वहाँ उसे बहुत डर लगता है। वजह जानने के लिए जब उससे विस्तार से पूछा गया तो उसने कहा 'हम नोएडा में किराए के मकान में रहते हैं। मम्मी बिल्डिंगों में सफाई का काम करती हैं और पापा बेलदारी करते हैं। मकान में चार कमरे हैं लेकिन यह सही तरीके से बना हुआ नहीं है। ऊपर सीमेंट की चद्दर और ईंट पर कच्चा प्लास्टर किया हुआ है। इसके बावजूद महीने का ढाई हजार किराया देना पड़ता है।' उसने आगे बताया कि इस कमरे में पहले एक और परिवार रहता था। उस परिवार में एक बूढ़ी अम्मा भी थीं, जिनकी

तबीयत अक्सर खराब रहती थी और एक दिन इसी कमरे में उनका निधन हो गया। 'अब जब हम अकेले रहते हैं तो वही बातें याद आती हैं और डर बहुत सताता है। लगता है जैसे कोई पीछे बैठा है और हमसे बात करना चाहता है। कभी-कभी अपने आप सामान भी गिर जाता है। जब डर ज्यादा हो जाता है तो मैं तुरंत अपना काम छोड़कर दोस्त के कमरे में चली जाती हूँ। वहीं बैठकर मन को थोड़ा सहारा मिलता है और जब तक माता-पिता काम से वापस नहीं आते, तब तक मैं अपने कमरे में नहीं जाती।' पिंकी कहती है कि इसी कारण जब-जब डर लगता है तो सुबह जल्दी-जल्दी घर का काम कर लेती हूँ और दिन भर बाहर ही बैठी रहती हूँ। हालाँकि परिवार दूसरी जगह कमरा लेना चाहता है लेकिन गाँव के अंदर किराया बहुत महंगा है। इसलिए मजबूरी में उन्हें इसी कमरे में रहना पड़ रहा है।

ठेकेदार, बच्चों को अपने गाँवों से बुलाकर दिल्ली, नोएडा जैसे शहरों में करवा रहे बाल मजदूरी

बातूनी रिपोर्टर अंकित व रिपोर्टर किशन

जब भी आप रास्ते में पटरी पर लगी ठेलियों पर नाश्ता आदि खाते हैं, तो आप वहाँ कई छोटे और बड़े बच्चों को काम करते हुए देख सकते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि ये बच्चे अपने आप यह काम कर रहे हैं या उन्हें जबरदस्ती लाया गया है? इस बात को समझने के लिए पत्रकारों ने नोएडा में रहने वाले 15 वर्षीय एक बालक सोनू (परिवर्तित नाम) से इस विषय पर विस्तार से बात की। बालक ने बताया कि वे अपने परिवार के साथ नोएडा में किराए के मकान में रहते हैं। उनकी बिल्डिंग में 10 कमरे हैं और एक बड़ा मैदान भी है, जहाँ गाड़ियाँ और ठेले खड़े रहते हैं और बच्चे खेल भी सकते हैं। इस स्थान पर कुछ ऐसे बच्चे हैं जो बिहार, बंगाल आदि के रहने वाले हैं। इन्हें उनके गांव से ठेकेदार लेकर आए हैं। इन बच्चों की

उम्र 7 वर्ष से लेकर 17 वर्ष तक है। छोटे और बड़े बच्चे नान, छोले-भटूरे आदि की दुकानों में काम करते हैं। 7 से 13 वर्ष के बच्चों से बर्तन साफ करवाना, आए हुए ग्राहकों को खाना देना और थोड़ी साफ-सफाई करवाना आदि, ये सब ठेकेदार करवाते हैं। इन बच्चों को महीने के 6000 मिलते हैं। यह राशि सुनने में कम लगती है, लेकिन ठेकेदार उन्हें दिन में दो बार खाना भी देते हैं, इसलिए पैसा काटकर दिया जाता है। 15 से 17 वर्ष के बड़े बच्चे नान-रोटी बनाने का काम करते हैं और कठिन मेहनत के लिए उन्हें हर महीना 20000 मिलते हैं। बच्चों के माता-पिता हर महीने फोन के माध्यम से उनसे बात करते हैं, लेकिन वो भी अक्सर उन्हें पैसों के लिए ही कॉल करते हैं। जो बच्चे ठेकेदार के साथ रहते हैं, उन्हें रोजाना 20 मिलते हैं। शाम के समय वे इन पैसों से सिगरेट, गुटका, तंबाकू आदि का सेवन करते हैं। ठेकेदार भी उन्हें यह सब करने से रोकता नहीं, बल्कि नशा करने के लिए उन्हें पैसे देता है। कभी-कभी बच्चे इतने नशे में हो जाते हैं कि खाने-पीने का भी होश नहीं रहता। माता-पिता को यह सब पता है, लेकिन वे कुछ नहीं कहते क्योंकि वे स्वयं नशा करते हैं। उनके लिए उनकी ये संताने महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि उनके द्वारा कमाया गया धन ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

वजीराबाद में बालक हौदी में गिरा, दोस्त ने दिखाई बहादुरी और बचाई जान

बालकनामा रिपोर्टर - सबेरुल
बातूनी रिपोर्टर - जतिन

वजीराबाद की तंग गलियों में उस समय अफरा-तफरी मच गई जब 10 वर्षीय बालक नितिन (परिवर्तित नाम) पानी भरते समय एक खुले हौदी (पानी का टैंक) में गिर गया। सौभाग्य से उसका दोस्त पास ही मौजूद था, जिसने तुरंत सूझ-बूझ और बहादुरी दिखाते हुए उसकी जान बचा ली। घटना सुबह की है, जब नितिन रोज की तरह नहाने के लिए हौदी से पानी भरने गया था। पानी भरते समय उसका पैर फिसल गया और वह सीधे हौदी में गिर पड़ा। हौदी गंदगी और फिसलन भरे क्षेत्र में स्थित है, जिसके आसपास कूड़े का ढेर और बहती नालियों का पानी फैला हुआ है।

घटनास्थल के पास से गुजर रहा उसका दोस्त अचानक यह दृश्य देखकर घबरा गया, लेकिन बिना समय गंवाए उसने आसपास रखे एक पाइप की मदद से नितिन की ओर बढ़ाया और उसे पकड़ने को कहा। नितिन ने हिम्मत दिखाई, पाइप को मजबूती से पकड़ा और उसका दोस्त उसे खींचकर सुरक्षित बाहर निकाल लाया। घटना के बाद स्थानीय लोगों में भारी नाराजगी देखी गई। एक निवासी ने कहा, 'हम रोज डर के साए में जीते हैं। ये हौदी बच्चों के लिए जानलेवा बन चुकी है। न गली की सफाई होती है, न नालियाँ ठीक हैं। हर तरफ गंदगी और बदबू फैली रहती है।' इलाके की सफाई व्यवस्था पूरी तरह चरमरा चुकी है।

बारिश के दिनों में जलभराव और बदबू लोगों का जीना मुश्किल कर देते हैं। बच्चों के लिए खुले हौदी और टूटी सड़कों से गुजरना खतरे से खाली नहीं

है।

जब जतिन से पूछा गया कि क्या उसे डर नहीं लगता, तो उसने मासूमियत से जवाब दिया, 'डर तो लगता है, लेकिन और कोई रास्ता नहीं है। हम रोज यहीं से पानी भरते हैं।' इस बार जतिन की जान बच गई, लेकिन अगर समय रहते कोई कार्रवाई नहीं की गई, तो अगली बार कोई और मासूम इस लापरवाही की भेंट चढ़ सकता है।

घर की आर्थिक मजबूरी के कारण सड़क एवं कामकाजी बच्चे काम करने के लिए मजबूर

बालकनामा रिपोर्टर : सबेरुल
बातूनी रिपोर्टर: अजहरुल

वजीराबाद के एक सुनसान मैदान में दोपहर की तपती धूप के नीचे कुछ ट्रैम्पोलिन नजर आते हैं। ये बच्चों के खेलने का साधन हैं, लेकिन वहीं पास एक बच्चा खड़ा है जो खेल नहीं रहा बल्कि उनका ध्यान रख रहा है। रिपोर्टर जब उस बच्चे अली (परिवर्तित नाम), उम्र लगभग 12 साल, से बातचीत करता है, तो वह कहता है, 'स्कूल जाना अच्छा लगता है, लेकिन घर की मजबूरी है। अब्बू बीमार हैं, अम्मी सफाई का काम करती हैं। घर की हालत ऐसी नहीं कि सब कुछ अकेले चला सकें। इसीलिए मुझे भी काम करना पड़ता है।'

वह आगे बताता है, 'मुझे पढ़ना अच्छा लगता है। मैं कुछ बनना चाहता हूं, लेकिन किताबों के पैसे नहीं हैं। ट्रैम्पोलिन की देखरेख का काम मुझे पसंद नहीं है, पर जो कुछ भी कमाता हूं, उससे घर का राशन आ जाता है।' यह कहानी सिर्फ अली की नहीं है, बल्कि उन सैकड़ों बच्चों की है जो गरीबी और कठिन परिस्थितियों की मार झेल रहे हैं। बाल मजदूरी की सबसे बड़ी वजह गरीबी है। जब घर में रोटी की चिंता हो, तो पढ़ाई और बचपन पीछे छूट जाते हैं। शहर के कई इलाकों में, विशेषकर प्रवासी परिवारों के बीच, जहां न राशन कार्ड है और न सरकारी योजनाओं की सीधी पहुंच, वहां बच्चों के लिए काम करना मजबूरी बन चुका है। शिक्षा, खेल और बचपन उनके लिए बस एक सपना भर हैं। बातचीत के दौरान उसने बताया, 'जब अपने दोस्तों को यूनिफॉर्म पहनकर स्कूल जाते हुए देखता हूं, तो मन करता है कि मैं भी पढ़ूं, लेकिन क्या करूं। हमारे जैसे बच्चों का बचपन घर की जिम्मेदारियों में दब जाता है।' वजीराबाद के मैदान में ट्रैम्पोलिन पर खेलते बच्चों की हंसी और उनके पास खड़े काम करते बच्चे की खामोश मजबूरी दोनों के बीच का अंतर सिर्फ एक दृश्य नहीं, बल्कि एक सामाजिक सच्चाई है। आज भी समाज में बाल मजदूरी को सामान्य मान लिया जाता है, लेकिन बाल मजदूरी सामान्य नहीं है, यह बचपन की हत्या है। हमें यह समझना होगा कि हर बच्चा स्कूल जाने, खेलने, सपने देखने और जीवन को पूरी तरह जीने का अधिकार रखता है।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

खतरों से जूझते मासूम

बातूनी रिपोटर अहसान

पश्चिमी दिल्ली के शकुर बस्ती का इलाका बहुत बड़ा है और यहाँ पूरे क्षेत्र में लोग अपनी-अपनी झुग्गियाँ बना चुके हैं। इलाके में जगह-जगह गड्ढे हैं, जो बारिश होने पर पानी से भर जाते हैं। आज हम आपको इसी इलाके में रहने वाले दो दोस्तों की खबर बताने जा रहे हैं जिन्होंने अपनी सूझ-बूझ से खुद की जान बचाई।

एक दिन तेज बारिश हो रही थी। बारिश बंद होने के बाद 12 वर्षीय जीत (परिवर्तित नाम) खेलने के लिए बाहर गया। तभी उसने अपने दोस्त 14 वर्षीय वरुण (परिवर्तित नाम) को साइकिल पर आते हुए देखा। वरुण ने बताया कि उसे श्रीनगर जाना है कुछ सामान लेने। जीत ने उसकी बात सुनी और उसके पीछे बैठ गया। साइकिल लेकर थोड़ी दूरी तय करने के बाद वरुण रुका और जीत को कहा कि वह बाथरूम करने जा रहा है। साइकिल वहीं खड़ी कर दी। जीत वहीं खड़ा होकर उसका इंतजार करने लगा। जहाँ जीत खड़ा था, वहाँ एक दीवार पर एक कंबल टंगा हुआ था। कंबल पूरी तरह सड़ा और गीला था। जीत ने शरारत करते हुए कंबल अपनी तरफ खींचने की कोशिश की, लेकिन उसे पता नहीं था कि कंबल के साथ दीवार पर एक तार जुड़ी हुई थी और उस तार में करंट था। जैसे ही उसने कंबल खींचा, करंट लगने से जीत जोर से हिलने लगा। तभी वरुण आ गया और उसने अपने दोस्त को देखा।

सारी स्थिति समझते ही उसने पास के एक घर से सूखी लकड़ी ली और आसपास के लोगों को बुलाया। लकड़ी की मदद से उन्होंने कंबल और तार को छुड़ाने की कोशिश की। धीरे-धीरे आसपास कई लोग इकठ्ठा हो गए और जीत को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। जीत बहुत डर गया था, इसलिए कुछ देर तक किसी से बात नहीं की। कुछ समय बाद जब उसका डर थोड़ा कम हुआ, तब उसने पूरी घटना बताई। लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं होती। इस घटना के बाद दोनों दोस्तों को पता चला कि ऐसा पहली बार नहीं हुआ है। इससे पहले चार और लोगों को भी इसी तरह करंट लग चुका है और उनकी जान बची है। यह तार बहुत दिनों से ऐसे ही पड़ी थी और कंबल भी यथावत था।

इतनी घटनाएँ होने के बाद भी कोई जागरूक नहीं हुआ। घटना के अगले दिन जीत और वरुण वहाँ फिर गए और आसपास के लोगों से बात करके उस तार को ठीक कराया, ताकि आगे किसी को इस तरह करंट न लगे।

बुलिंग से परेशान होकर सरकारी स्कूल छोड़ बच्चे ने लिए प्राइवेट स्कूल में दाखिला

ब्यूरो रिपोर्ट

यदि आपसे कोई पूछे कि जिस जगह आपको सुरक्षित महसूस न हो, क्या आप वहां रहना या जाना पसंद करेंगे? तो आपका जवाब निश्चित रूप से 'नहीं' होगा। नोएडा की एक बस्ती में रहने वाले 14 वर्षीय बालक परेश (परिवर्तित नाम) के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। उसने अपने परिवार को पूरी घटना बताई और स्वयं निर्णय लिया। जब पत्रकार बालक से मिले, तो उसने अपनी कहानी विस्तार से बताई। कुछ दिन पहले की बात है, वह सरकारी स्कूल में कक्षा 6 में पढ़ाई करता था और रोजाना स्कूल जाता था, लेकिन वहां का माहौल इतना खराब था कि उसे उस स्कूल से नाम कटवाना पड़ा। स्कूल में अन्य बच्चे बहुत शरारती थे और छोटी-छोटी बातों पर एक-दूसरे को मारते-पीटते थे। एक दिन वह मैदान में खेल रहा था, तभी एक बड़े बच्चे ने उसे धक्का दिया और मारने लगे। बालक और उसके दोस्त ने 'सॉरी' कह दिया, तब वह थोड़ी देर के लिए चुप हो गया। पर वह फिर काफी गुस्से में था। उन्होंने यह घटना अपनी क्लास की मैडम को बताई और कहा कि उन्हें स्कूल के बाहर भी डर लग रहा है। अध्यापिका ने कहा, 'टेंशन मत लो,

कुछ नहीं करेंगे।' लेकिन छुट्टी के बाद जैसे ही बालक स्कूल से बाहर आया, वही बच्चे झुंड बनाकर खड़े थे। दो बच्चों ने उसका हाथ पकड़ा और जिसने पहले धक्का दिया था, उसने उसे पीटा और पेन लेकर सिर पर मारा। सिर से खून निकलने लगा। बालक रोते-रोते घर चला गया। उसके परिवार ने उसे तुरंत डॉक्टर के पास ले जाकर इलाज करवाया। अगले दिन बालक ने फिर से स्कूल में अध्यापिका को पूरी बात बताई, लेकिन कोई निर्णय नहीं लिया गया। इस कारण उसके पिताजी ने सरकारी स्कूल से नाम कटवाकर उसे प्राइवेट स्कूल में दाखिला दिलवाया।

चोरी की वजह से बच्चों में डर का माहौल

बालकनामा रिपोर्टर - सबेरुल
बातूनी रिपोर्टर - सुमित

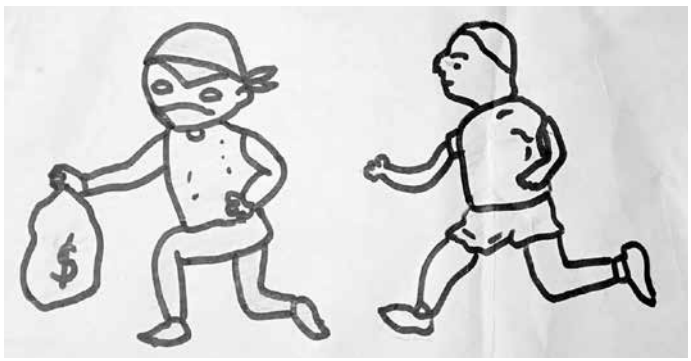

वजीराबाद के सेक्टर 52 में एक मोबाइल चोरी की घटना ने क्षेत्र में भय और असुरक्षा का माहौल पैदा कर दिया है, खासकर बच्चों में। यह घटना सोमवार सुबह लगभग 10 बजे हुई, जब अधिकतर लोग अपने काम पर जा चुके थे। एक व्यक्ति अपने घर में आराम कर रहा था और दरवाजा खुला था, क्योंकि यह सुबह का सामान्य समय था। इसी दौरान एक चोर घर में दाखिल हुआ और मोबाइल फोन उठाकर तेजी से भाग गया। व्यक्ति की नींद तब खुली जब उसने चोर को मोबाइल के साथ जाते देखा। उसने शोर मचाया और तुरंत चोर के पीछे भागा, लेकिन तब तक चोर काफी दूर निकल चुका था। पीड़ित व्यक्ति ने बताया, 'मेरे मोबाइल में मेरी कई जरूरी जानकारियाँ थीं। यह घटना बेहद चौंकाने वाली है।' घटना के समय पास में कई बच्चे सड़क पर खेल रहे थे। कुछ बच्चों ने चोर को भागते हुए देखा, जिससे वे डर गए हैं। स्थानीय अभिभावकों ने फिलहाल बच्चों को बाहर खेलने से मना कर दिया है। एक माता-पिता ने कहा, 'अगर दिन के उजाले में ऐसी घटनाएं हो रही हैं, तो रात का अंदाजा लगाना मुश्किल है। अब तो ऐसा लगता है कि हम अपने ही घरों में सुरक्षित नहीं हैं।' स्थानीय निवासियों का मानना है कि पुलिस की कार्यशैली प्रभावी नहीं है। उनका कहना है कि पुलिस समय पर सक्रिय नहीं होती, जिससे अपराधियों के हौसले बढ़ते जा रहे हैं। गौरतलब है कि यह पहली बार नहीं है जब वजीराबाद में चोरी की घटना हुई हो। बीते कुछ महीनों में कई ऐसे मामले सामने आ चुके हैं, लेकिन उचित कार्रवाई की कमी लोगों में असंतोष और भय पैदा कर रही है। इस घटना का सबसे बड़ा असर बच्चों पर पड़ा है, जिनमें अब असुरक्षा की भावना दिखाई दे रही है।

स्कूल के बच्चों की सुरक्षा करने वाला गार्ड जब खुद नहीं रहा सुरक्षित

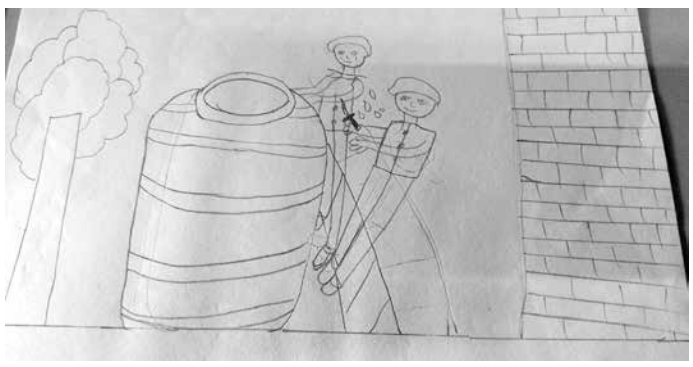

बालकनामा रिपोर्टर रितिका,
बातूनी रिपोर्टर खुशी

यह खबर पश्चिमी दिल्ली के सर्वोदय कन्या विद्यालय, इंद्रलोक की है। चेतना केंद्र से स्कूल पढ़ने जाने वाले बच्चों ने बताया कि स्कूल में बच्चों की सुरक्षा के लिए रखा गया गार्ड भी वहां सुरक्षित नहीं था। 1 जुलाई 2025 को स्कूल गार्ड की हत्या कर दी गई।पास के लोग और स्कूल जाने वाले बच्चों ने बताया कि स्कूल गार्ड अंकल हमारे स्कूल की चौकीदारी करते थे और स्कूल के सभी कमरे और ऑफिस का ध्यान रखते थे। लेकिन एक दिन रात में गार्ड अपने परिवार के साथ स्कूल की चौकीदारी कर रहे थे। गार्ड की ड्यूटी का समय शाम 4 बजे से रात 10 बजे तक था। उस दिन गार्ड ने अपने परिवार को घर भेजते हुए कहा, 'आप लोग घर चले जाइए, मैं अभी स्कूल की टंकियों का पानी चेक करके घर आता हूँ।' जैसे ही गार्ड टंकी की जांच करने गए, पीछे से 2-4 लड़के गेट से कूदकर स्कूल के अंदर आए। उनका इरादा था कि ऑफिस से चोरी करें, लेकिन वे इसमें सफल नहीं हो पाए। गार्ड ने उन्हें रोकने की कोशिश की, तभी उन लड़कों ने गार्ड पर चाकू से हमला किया और हत्या कर दी। गार्ड ने अपनी जान जोखिम में डालकर स्कूल की सुरक्षा की और कोई सामान चोरी नहीं होने दिया। जब गार्ड की हत्या हुई, तो उनके बेटे ने देखा कि पिताजी बहुत देर से घर नहीं आए। वह स्कूल गया और गार्ड की हत्या का दृश्य देख कर जोर-जोर से चिल्लाने लगा। उसकी आवाज सुनकर गार्ड का परिवार और आसपास के लोग एकत्रित हुए। उन्होंने तुरंत पुलिस और स्कूल प्रिंसिपल को सूचना दी। रात में पुलिस, गार्ड का परिवार और स्कूल प्रिंसिपल स्कूल पहुंचे। पुलिस ने तुरंत रिपोर्ट दर्ज की और हत्या की जांच शुरू कर दी। इस हादसे के बाद जखीरा से स्कूल जाने वाली लड़कियों के दिलों में डर बैठ गया है। बच्चे स्कूल जाने से कतराते हैं और अभिभावकों को भी बच्चों को स्कूल भेजने में डर लगता है। बच्चे अब खुद को सुरक्षित महसूस नहीं कर रहे हैं।

बस्ती में बढ़ती चोरियों से बच्चों का बचपन हो रहा असुरक्षित

बालकनामा रिपोर्टर - रितिका
बातूनी रिपोर्टर - अर्चना

गुरुग्राम के नाथूपुर की झुग्गी-बस्ती में लगातार हो रही चोरी की घटनाएँ अब छोटे बच्चों के जीवन को भी प्रभावित करने लगी हैं। बालकनामा की रिपोर्टर रितिका ने जब इस बस्ती का दौरा किया, तो वहां रहने वाले कई बच्चों से बातचीत की। इसी दौरान एक बच्चे ने बताया कि चेतना संस्था के शिक्षा केंद्र में पढ़ने वाली 9 वर्षीय रचना (परिवर्तित नाम) के घर में हाल ही में चोरी हुई है। रचना बिहार की रहने वाली है और अपने परिवार के साथ वर्तमान में नाथूपुर की झुग्गी-बस्ती में रह रही है। बच्चे की मदद से रिपोर्टर रचना के घर पहुँची और उससे बातचीत की। रचना ने बताया, 'यह घटना 1 जुलाई की रात की है। जब हम सभी सो रहे थे, किसी ने हमारे घर में घुसकर पैसे और जरूरी सामान चुरा लिया। सुबह जब मेरी माँ उठीं, तो देखा कि अलमारी खुली हुई थी और सारा सामान बिखरा पड़ा था। पैसे गायब थे। उस दिन से घर में सभी बहुत परेशान हैं। माँ रो रही थीं, क्योंकि चोरी की वजह से हम सब्जी तक नहीं खरीद पा रहे हैं।' इस घटना ने रचना जैसे बच्चों के मन में असुरक्षा की भावना भर दी है। जहाँ एक ओर ये बच्चे शिक्षा की ओर कदम बढ़ा रहे हैं, वहीं ऐसी घटनाएँ उनके मानसिक और भावनात्मक विकास को बाधित कर रही हैं।

सड़क और कामकाजी बच्चे हो रहे बारिश के पानी से बीमार

बालकनामा रिपोर्टरः रितिका
बातूनी रिपोर्टरः दुर्गेश

गुरुग्राम स्थित चक्करपुर की झुग्गी-बस्ती का दौरा जब बालकनामा की रिपोर्टर रितिका ने किया तो इस दौरान उन्हें वहाँ बड़ी संख्या में बच्चे मिले।

बातचीत के दौरान 10 वर्षीय धर्मेश (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'बरसात का मौसम हमारे लिए खेल का समय बन जाता है, लेकिन यह हमारे लिए नुकसानदेह भी होता है।'

धर्मेश ने कहा कि बारिश होते ही बच्चे मस्ती में नहाने लगते हैं। कई बार स्कूल से पहले ही बारिश शुरू हो जाती है या स्कूल की छुट्टी हो जाती है, तो बच्चे स्कूल नहीं जा पाते। इससे उन्हें खांसी, बुखार और सर्दी-जुकाम जैसी स्वास्थ्य समस्याएँ होने लगती हैं।

उसने यह भी बताया कि कुछ बच्चे बारिश में इतना भीगते हैं कि

शेष पृष्ठ 6 पर

अभिभावकों ने कानून की उचित जानकारी एवं खुद के प्रयासों से बच्चों की शिक्षा के खोले द्वार

बालकनामा रिपोर्टरः दामिनी
बातूनी रिपोर्टरः साक्षी

जयपुर की जयसिंहपुरा खोर कच्ची बस्ती में रहने वाले अभिभावकों ने शिक्षा के अधिकार (फ्छए) अधिनियम के तहत अपने बच्चों के स्कूल में दाखिले के लिए जो पहल की, वह मिसाल बन गई है। 14 वर्षीय बालक अनिल (परिवर्तित नाम) ने बताया कि विद्यालय में शिक्षकों ने उम्र अधिक होने के कारण बच्चों का दाखिला देने से मना कर दिया। लेकिन उनकी मां, अनिता (परिवर्तित नाम), ने हार नहीं मानी। अनिता जी स्वयं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नौरखा पहुंचीं और शिक्षकों से स्पष्ट शब्दों में कहा 'आप मेरे बच्चों का एडमिशन लीजिए, पढ़ाई का अधिकार सभी को है।' जब स्कूल की शिक्षिकाओं ने कहा कि बच्चे बड़े हो चुके हैं, तो अनिता जी ने जवाब दिया - 'अगर मैं पढ़ना चाहूं तो आप मुझे भी पढ़ा सकते हैं। मेरे बच्चों का क्या दोष है? बस्ती के बाकी बच्चों को आपने एडमिशन दिया है, फिर मेरे बच्चों को क्यों नहीं?' इतना ही नहीं, अनिता जी ने शिक्षकों से बच्चों को स्कूल में दाखिला न देने का कारण लिखित में देने की मांग की। जब टीचर ने कहा कि आपको चेतना संस्था की मैडम ने भेजा है, तो अनिता जी ने दृढ़ता से कहा 'वह मैडम मेरे बच्चों की मां नहीं हैं, मां तो मैं हूं। मैं खुद उन्हें स्कूल लेकर आई हूं। अगर आप एडमिशन नहीं लेंगे, तो मैं मीडिया को बुलाऊंगी।' अनिता जी की इस पहल ने साबित कर दिया कि जब अभिभावक अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होते हैं, तो वे बच्चों के भविष्य को बदल सकते हैं। यह घटना न केवल शिक्षा के अधिकार अधिनियम के महत्व को बताती है, बल्कि यह भी दिखाती है कि सही जानकारी और हिम्मत से कैसे व्यवस्था से जवाब मांगा जा सकता है। अंततः विद्यालय के शिक्षकों ने बालक को कक्षा 6 में दाखिला दिया, साथ ही उसके दो छोटे भाई और एक छोटी बहन को भी उनकी उम्र के अनुसार स्कूल में प्रवेश मिला।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

ट्यूशन पढ़कर बालक ने जाहिर की अपनी खुशी

बातूनी रिपोर्टर रवि व रिपोर्टर किशन

जीवन में शिक्षा बहुत जरूरी है। चाहे हम स्कूल जाकर पढ़ाई करें या आसपास के लोगों द्वारा पढ़ाए जा रहे ट्यूशन के माध्यम से। कई बच्चे ऐसे हैं जो किसी कारणवश अभी स्कूल नहीं जा पाते, लेकिन ट्यूशन के माध्यम से पढ़ाई जारी रखते हैं। नोएडा की कुछ बस्तियों में जब पत्रकार पहुंचे, तो उन्होंने खेल रहे बच्चों से बातचीत की। इस दौरान 12 वर्षीय बालक लेखु (परिवर्तित नाम) से पूछा गया कि वह स्कूल क्यों नहीं जाते। बालक ने बताया कि वे बिहार के रहने वाले हैं और नोएडा आए हुए उन्हें अभी 2 महीने हुए हैं। इसके पहले उनके माता-पिता पहले से इस स्थान पर रहते थे, और वे खुद गांव में रहते हुए वहीं पढ़ाई किया करते थे। बालक ने आगे बताया कि गांव का माहौल ठीक नहीं था, इसलिए उनके पिताजी ने उन्हें नोएडा बुला लिया। इस कारण वे अभी स्कूल नहीं जाते क्योंकि आसपास के स्कूल की जानकारी नहीं है। इसके बजाय उनके पिताजी ने पास के ट्यूशन में उनका नाम लिखवा दिया। वह सुबह 8:00 बजे से 10:00 बजे तक और शाम 6:00 बजे से 8:00 बजे तक ट्यूशन जाते हैं। बालक ने खुशी से कहा कि उन्हें गांव से आकर खाली नहीं बैठना पड़ा और ट्यूशन पढ़ाई का मौका मिला। ट्यूशन के भैया पढ़ाने में बहुत अच्छे हैं और समझदार भी हैं। भैया विकलांग हैं, इसलिए कामकाज नहीं कर पाते, लेकिन आसपास के बच्चों को पढ़ाते हैं।उन्होंने बताया कि भैया ट्यूशन की फीस के लिए ज्यादा परेशान नहीं करते। वैसे तो वे हर महीने 200 रुपये देते हैं, लेकिन जब पिताजी के पास पैसे नहीं होते, तब भी भैया इसे सहजता से मान लेते हैं और कहते हैं कि जब दे दो तब ठीक है, लेकिन पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए।

पढ़ाई के अलावा भैया उन्हें बाहर की दुनिया के बारे में भी कई महत्वपूर्ण बातें सिखाते हैं, जो उनके जीवन के लिए बहुत जरूरी हैं। पिताजी का कहना है कि कुछ महीने ट्यूशन पढ़ोगे, तो ध्यान पढ़ाई में लगेगा और फालतू नहीं घूमोगे। फिर कुछ समय बाद स्कूल में दाखिला करवा दिया जाएगा।

कच्ची बस्ती की झुग्गियों में लटकती बिजली की केबलें बन रही हादसों का कारण

बालकनामा रिपोर्टर: दीपक
बातूनी रिपोर्टर: गौतम

बालकनामा रिपोर्टर दीपक ने जब जयपुर के मानसरोवर की कच्ची बस्ती का दौरा किया, तब जानकारी मिली कि बस्ती में बिजली की असुरक्षित व्यवस्था एक बड़ी दुर्घटना का कारण बन गई। 10 वर्षीय नवीन (परिवर्तित नाम) जो अपने माता-पिता और छोटे भाई के साथ बस्ती में रहता है, एक दर्दनाक हादसे का शिकार हो गया। बस्ती में बिजली की कोई सरकारी सुविधा नहीं है, इसलिए लोग आसपास के पक्के घरों से निजी स्तर पर पैसे देकर बिजली लेते हैं। एक दिन जब बस्ती में पानी का टैंकर आया, तब उससे फैली गंदगी और नमी के कारण कई जगहों पर बिजली के तारों में फॉल्ट हो गया। कुछ बच्चों ने फॉल्टेड केबल को कबाड़ समझकर बेचने का सोचा, उन्हीं में से नवीन भी था। जैसे ही उसने केबल को समेटना शुरू किया, उसके पूरे शरीर में करंट दौड़ गया और वह बेहोश होकर गिर पड़ा। आसपास के लोगों ने तुरंत सूझबूझ दिखाते हुए डंडों की मदद से उसे केबल से अलग किया और अस्पताल पहुंचाया। समय पर उपचार मिलने से बालक की जान बच गई, लेकिन उसके हाथों में गंभीर जलन हो गई है और वह अब भी नियमित रूप से दवाइयाँ ले रहा है। इस घटना के बाद बस्ती में दहशत का माहौल है। बातूनी रिपोर्टर गौतम ने बताया कि इस बस्ती में बिजली, पानी और शौचालय जैसी मूलभूत सुविधाएं नहीं हैं। सभी लोग काम पर चले जाते हैं और बच्चे दिनभर बस्ती में अकेले रहते हैं। हादसे के बाद लोगों की आंखें जरूर खुली हैं, लेकिन खतरा अब भी बना हुआ है। बस्ती की यह स्थिति प्रशासन से ध्यान देने की मांग करती है, ताकि भविष्य में ऐसे हादसों से बच्चों की जान बचाई जा सके।

जयपुर में भारी बारिश के कारण सड़क एवं कामकाजी बच्चे झेल रहे कई कठिनाइयाँ

बालकनामा रिपोर्टर: दीपक
बातूनी रिपोर्टर: नमन

बालकनामा रिपोर्टर ने जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया और बच्चों से भारी बारिश के दौरान आने वाली समस्याओं के बारे में उनके अनुभव जानने की कोशिश की। इस क्रम में 11 वर्षीय बालक अमन (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'इस बार लगातार हुई बारिश से हमारी झुग्गी-झोपड़ियों में पानी भर गया है, जिससे बच्चों और उनके परिवार वालों को बहुत परेशानी हुई। घर का सामान भी अस्त-व्यस्त हो गया है और कई कीमती चीजें खराब हो गई हैं। घरों के अंदर पानी भर जाने से गंदगी फैल रही थी।

इतना ही नहीं, हमारी बस्ती में अधिकांश बच्चों के हाथ-पाँव में फुंसियां हो रही हैं, जिसके कारण बच्चे स्कूल भी नहीं जा पाते।'

10 वर्षीय बालिका आलिया (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'बारिश होना जरूरी है, लेकिन बारिश के कारण हम घर के बाहर भी नहीं सो सकते और रात में बिजली भी नहीं आती। बारिश से हमारे अभिभावक काम पर नहीं जा पाते, जिससे बच्चों को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है। सुबह-सुबह बारिश होने की वजह से बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे हैं, और इस कारण स्कूल के प्रति रुझान भी कम होता दिखाई दे रहा है।'

12 वर्षीय बालक आर्यमन (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'बस्ती में शौचालय न होने के कारण हम बारिश में बाहर शौच के लिए नहीं जा पाते। यहाँ किसी के भी पक्के मकान नहीं बने हैं, सभी झुग्गियों में रहते हैं। हमें रोजाना इसी तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।'

बच्चे अपने माता-पिता की न सुनकर कर रहे गलत कार्य

ब्यूरो रिपोर्ट

नोएडा की कुछ बस्तियों में बच्चे इतने परेशान हैं कि वे नादानी में किसी भी गलत कार्य को करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

जब बालकनामा पत्रकार बस्तियों में पहुंचे, तो 15 वर्षीय एक बालिका मोहिनी (परिवर्तित नाम) ने बड़ी दुखी आवाज में बताया कि उनकी बस्ती में नशा बेचने का काम होता है। यह लोग बाहर से आते हैं और बस्ती के पास रहकर महीनों और वर्षों से यह काम कर रहे हैं। इन लोग पुलिस वालों को महीने की रिश्वत देते हैं, इसलिए कोई इन्हें रोक नहीं पाता और बस्ती के लोग भी कुछ नहीं कह पाते। समस्या यह है कि ये लोग बस्ती के बच्चों को भी गलत संगत में रखते हैं। बच्चों को अपने साथ व्यस्त रखकर उन्हें नशीले पदार्थ बेचने और अन्य घरेलू कार्य करवाने जैसे काम कराते हैं जैसे साफ-सफाई करना, दुकान से सामान लाना आदि।

बस्ती में 5 साल से 17 साल तक के बच्चे इस कार्य में शामिल हैं। बच्चों में से कुछ को नशा बेचने के लिए भेजा जाता है, और साथ ही कुछ बच्चों को नशा भी करवाया जाता है। कई बच्चों के माता-पिता कामकाज के कारण इस बात को नहीं जानते कि उनके बच्चे यह काम कर रहे हैं। जब तक माता-पिता लौटते हैं, बच्चे अपने घर चले जाते हैं। कुछ माता-पिता को यह पता होता है और वे बच्चों को समझाते, डाँटते या मारते भी हैं, पर बच्चे उनकी बिल्कुल नहीं सुनते और विपरीत जवाब दे देते हैं। माता-पिता का कहना है कि 'यदि बच्चे हमारी नहीं सुनते, तो किसी की नहीं सुनेंगे, करने दो जैसा मन में आए।' इसके चलते ये लोग बच्चों का फायदा उठाते हैं और उन्हें नशा बेचने व नशा करने के लिए मजबूर करते हैं।

इस बात को जानने के बाद पत्रकारों ने बच्चों को समझाया कि यह कार्य बिल्कुल गलत है और इसे कभी भी नहीं करना चाहिए। बच्चों ने बताया, 'हम समझदार हैं और हमारे माता-पिता हमें समझाते हैं, पर हम यह काम नहीं करते।'

पत्रकारों ने बच्चों को चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर 1098 के बारे में भी बताया और कहा कि यदि किसी को लगे कि कोई व्यक्ति उनके साथ या अन्य बच्चों के साथ गलत कार्य कर रहा है, तो वह इस नंबर पर कॉल करके मदद ले सकते हैं।

सड़क और कामकाजी बच्चे हो रहे बारिश के पानी से बीमार

पृष्ठ 6 का शेष

गंदे पानी में लेट तक जाते हैं। कई जगहों पर सीवर के ढक्कन खुले होते हैं, जिससे गंदा पानी बाहर बहता है, लेकिन बच्चे उसी में खेलते रहते हैं।

धर्मेश ने बताया कि कई बार रात में जब बारिश होती है, तब भी बच्चे बाहर निकलकर नहाने लगते हैं, जिससे उनकी तबीयत और बिगड़ जाती है।

वह कहता है कि जब माता-पिता बच्चों को ऐसा करने से रोकते हैं, तो बच्चे उनकी बात नहीं मानते और बारिश में भीगते रहते हैं। कई बार बच्चों के कपड़े, स्कूल ड्रेस और जूते बारिश के कारण गीले हो जाते हैं, जिससे वे स्कूल नहीं जा पाते। इस पर स्कूल की मैडम भी उन्हें डांट देती हैं।

बच्चों की मुस्कान का बोझ उठाता कूड़ा, सवालों में उनका बचपन

बातूनी रिपोर्टर सलीम व रिपोर्टर किशन

जब आप सड़कों पर ध्यान देंगे, तो कई बच्चे आपको कबाड़े की बोरियाँ शरीर पर लाते हुए और ठेलियों पर खींचते हुए जरूर दिखेंगे। कई बच्चे बाजारों और गली-मोहल्लों में भी कबाड़ा बीनते नजर आते हैं। लेकिन सवाल यह है कि क्या उतने में उनका गुजारा हो पाता है या नहीं? पत्रकार नोएडा की कुछ बस्तियों में पहुंचे, जहाँ अधिकतर बच्चे कबाड़ा बीनने और छांटने का काम करते हैं। एक 13 वर्षीय बालक जॉन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि वर्तमान में कबाड़ा मिलना बहुत मुश्किल हो गया है। अधिकतर बच्चे बस बस्तियों में ही कबाड़ा बीनने का काम करते हैं और जगह-जगह मार्केट और गली-मोहल्लों में जाकर भी कबाड़ा इकट्ठा करते हैं। लेकिन अब कबाड़ा कम मिलने के कारण घर चलाना बहुत मुश्किल हो रहा है। इसलिए बच्चे एक नया रास्ता अपनाने लगे हैं। नोएडा के चारों तरफ बड़ी-बड़ी बिल्डिंगें हैं, और इन बिल्डिंगों में रहने वाले लोग अपने घर का कूड़ा निकालते हैं। बच्चे इसे उठाकर लाने का काम करते हैं। लेकिन किसी भी बिल्डिंग में जाने से पहले बिल्डिंग के सुपरवाइजर को पैसे देने पड़ते हैं। लोग इस काम के लिए लगभग 5000 रुपये देते हैं, कुछ इससे भी ज्यादा। जो ज्यादा पैसे देते हैं, वे अधिकतर टावरों से कूड़ा उठाते हैं। एक व्यक्ति 4-5 टावरों में जाकर कूड़ा इकट्ठा करता है और जो और अधिक टावरों में जाते हैं, वे ज्यादा पैसा देते हैं। कूड़ा उठाने के लिए ज्यादातर बच्चे 15-17 वर्ष के होते हैं। बालक ने बताया, 'हम इस कारण नहीं जाते क्योंकि हम उम्र में छोटे हैं और हाइट भी कम है। जो बच्चे कंपनियों में कबाड़ा लेने जाते हैं, वे उम्र में बड़े हैं और ऊँचाई में भी बड़े हैं। उन्हें कोई बच्चा नहीं कहता, और उनकी उम्र लगभग 1 वर्ष या उससे ज्यादा बड़ी लगती है। इसलिए उन्हें एंट्री मिल जाती है। लेकिन जब हमारे बड़े भाई या पिताजी कबाड़ा लेकर आते हैं, तो हम घर पर वह कबाड़ा छांटते हैं।' बालक ने आगे बताया कि कंपनियों से कबाड़ा लाने के कई फायदे हैं। वहां अधिक कबाड़ा मिलता है और इस काम से वे अपने घर का खर्चा चला पाते हैं।

गुरुग्राम में भारी बारिश से जनजीवन अस्त-व्यस्त,बच्चों की बढ़ी मुश्किलें

रिपोर्टरः राजकिशोर,
बातूनी रिपोर्टरः रतिका

गुरुग्राम में लगातार हो रही तेज बारिश ने झुग्गी बस्तियों में रहने वाले लोगों की परेशानी बहुत बढ़ा दी है। बालकनामा टीम के रिपोर्टर राजकिशोर और रतिका ने शहर की कई बस्तियों का दौरा किया, जहाँ हालात बहुत ही बुरे दिखे। लगातार बारिश से कई घरों में पानी भर गया है। कुछ घरों की छत टपक रही है, जिससे कपड़े, बिस्तर, बच्चों की कॉपियां, किताबें और जूते भीग गए हैं। इस वजह से बच्चों की पढ़ाई रुक गई है। कई घरों में रखा राशन भी खराब हो गया है, जिससे लोगों को खाने-पीने की दिक्कत हो रही है। दिहाड़ी मजदूरी करने वाले माँ-बाप का काम भी बारिश के कारण बंद हो गया है। इससे परिवार की हालत और खराब हो गई है। सबसे ज्यादा मुश्किल सड़कों और कामकाजी बच्चों को हो रही है। बच्चे उमस और गर्मी से परेशान हैं। बारिश के दिनों में बिजली भी बहुत कम आती है और गलियों-सड़कों में भरे पानी से हादसों का डर बना रहता है। कई बच्चे स्कूल भी नहीं जा पा रहे हैं और माँ-बाप उन्हें घर संभालने में लगा देते हैं। बच्चों का कहना है कि कई दिनों से वे बाहर खेल भी नहीं पा रहे हैं क्योंकि हर जगह पानी और कीचड़ फैला हुआ है। कुछ जगहों पर तो सीवर का पानी भी भर गया है। बच्चों ने चिंता जताते हुए कहा, 'इस समस्या से हम कैसे निपटें? कई दिनों से खेल तक नहीं पा रहे हैं। हर जगह पानी और कीचड़ है। अब देखना है कि इस बारिश से हमें कब तक राहत मिलती है।'

परिवार की याद में हर दिन जीती हूँ

बातूनी रिपोर्टर रोहिनी व रिपोर्टर किशन

नोएडा के एक गाँव में पत्रकार की मुलाकात 15 वर्षीय बालिका हीना (परिवर्तित नाम) से हुई। बालिका ने अपना परिचय देते हुए बताया, 'हम इस समय नोएडा में किराए के कमरे में रहते हैं। हमारे घर में चार सदस्य हैं- माता, पिता, एक भाई और एक बहन। हमारे माता-पिता गाँव में रहते हैं और खेती-बाड़ी का काम करते हैं। खेती की देखभाल करने वाला वहाँ और कोई नहीं है, इसलिए उन्हें गाँव में ही रहना पड़ता है।' उसने बताया, 'मैं और मेरा बड़ा भाई नोएडा में रहकर पास की बड़ी-बड़ी इमारतों में सफाई का काम करते हैं। इस काम से हम हर महीने करीब 10 हजार रुपये कमा लेते हैं और वह पैसे माता-पिता को भेज देते हैं, ताकि घर का खर्च चल सके। काम करते हुए मुझे ज्यादा दुख नहीं होता, लेकिन जब रात को अकेली बैठती हूँ तो माता-पिता की बहुत याद आती है और मैं रोने लगती हूँ। माता-पिता को देखे हुए एक साल से भी ज्यादा हो गया है। जब ज्यादा याद आती है तो वीडियो कॉल करके बात कर लेती हूँ।' उसने आगे कहा, 'हम गाँव इसलिए नहीं जा पाते क्योंकि काम से ज्यादा दिन की छुट्टी नहीं मिलती। अगर छुट्टी लेकर गाँव चले जाएँ तो यहाँ का काम छूट जाता है। इस वजह से हम अक्सर गाँव नहीं जा पाते। हाँ, जब कोई गाँव से नोएडा आता है तो हम अपने माता-पिता को बुला लेते हैं। उनके आने पर हमें सबसे बड़ी खुशी मिलती है, क्योंकि कई महीनों बाद उनके चेहरे देखकर दिल भर जाता है।' बालिका ने अंत में कहा, 'मैं सोचती हूँ कि जब मेरे माता-पिता नहीं रहेंगे तो मैं कैसे रह पाऊँगी। मैं अपने माता-पिता से बहुत प्रेम करती हूँ।'

खुले गड्ढों में गिरकर बच्चे हो रहे घायल, बड़ों की भी बढ़ी दिक्कतें

बालकनामा रिपोर्टरः रतिका
बातूनी रिपोर्टरः अंकुश

गुरुग्राम के चक्करपुर समुदाय में बरसात के दिनों में गड्ढों से लोगों की परेशानी बहुत बढ़ गई है। बालकनामा रिपोर्टर रतिका जब वहाँ पहुँचीं तो उन्होंने बच्चों और परिवारों से बातचीत की। तो इसी क्रम में 12 वर्षीय बालक अंकुश बताया की 'बारिश के दिनों में गड्ढों में पानी भर जाता है। पानी भरने की वजह से गड्ढे दिखाई नहीं देते और लोग गलती से उनमें गिर जाते हैं।' अंकुश ने जानकारी दी कि 4 अगस्त की शाम करीब 7:30 बजे, तेज बारिश के दौरान कई लोग गड्ढों में गिर गए। उन्होंने आगे कहा , 'मेरी मम्मी भी उस दिन गड्ढे में गिर गई थीं। उन्हें बाहर निकालने में बहुत परेशानी हुई और अब वो बीमार हैं। पिछले दो-तीन दिनों से वो काम पर भी नहीं जा पा रही हैं।' अंकुश ने यह भी बताया कि केवल उसकी मम्मी ही नहीं, बल्कि 3-4 और बच्चे भी गड्ढों में गिरे थे और वो भी बीमार पड़ गए हैं। जब बच्चों से पूछा गया कि ये गड्ढे क्यों बने हैं, तो उन्होंने कहा, यहाँ रोज सीवर का पानी भरा रहता है। सड़क बनाने का काम चल रहा है, लेकिन लगातार बारिश की वजह से हालात और बिगड़ गए हैं। बरसात में खुले गड्ढे बच्चों और बड़ों की सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा बन गए हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि अगर जल्द ही इन गड्ढों को नहीं भरा गया और सड़क को दुरुस्त नहीं किया गया, तो हादसों की संख्या और बढ़ सकती है।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए एचसीएल फाउंडेशन तथा अजीम प्रेमजी फाउंडेशन का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471